किताबों के पन्नो से कुछ लफ्ज़ें - सुकन्या दत्ता

किताबों के पन्नों से कुछ अलफ़ाज़
उड़कर आये और
चिपक गए मेरे ख़्वाबों से, न जाने कैसे
शायद समय के कुछ लम्हें
गिर कर आये और
लिपट गए मेरी ज़िंदगी में जैसे
मेरी रूह में बस गए हैं वह
निकालूं ऐसी ताक़त कहाँ
वह हैं तो हम हैं और
खूबसूरत है अपना ये जहान